

ये ना थी हमारी किस्मत के विसाल-ए-यार होता

अगर और जीते रहते, यही इंतज़ार होता

तेरे वादे पर जिये हम, तो ये जान झूठ जाना

के खुशी से मर न जाते, अगर ऐतबार होता

तेरी नाज़ुकी से जाना के बंधा था अहद बूदा

कभी तू न तोड़ सकता, अगर उसतवार होता

कोई मेरे दिल से पूछे, तेरे तीर-ए-नीम कश को

ये खलिश कहाँ से होती, जो जिगर के पार होता

ये कहाँ की दोस्ती है के बने हैं दोस्त नासे:

कोई चारा साज़ होता, कोई गम गुसार होता

रग-ए-संग से टपकता, वो लहू के फिर न थमता

जिसे गम समझ रहे हो, ये अगर शरार होता

गम अगर-चे जाँ गुसल है, पर कहाँ बचें के दिल है

गम-ए-इश्क़ गर न होता, गम-ए-रोज़गार होता

कहूँ किस से मैं के किया है, शब-ए-गम बुरी बला है

मुझे किया बुरा था मरण अगर ऐक बार होता

हुए मर के हम जो रुसवा, हुए क्यूँ न घर्क-ए-दरया

न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार होता

उसे कौन देख सकता के, यगाना हे वो यकता

जो दुई की बू भी होती, तो कहीं दो चार होता

ये मसा-एल-ए-तसव्वुफ़, ये तेरा बेअन, ग़ालिब

तुझे हम वाली समझते, जो न बादह खार होता

दिल ही तो है न संग-ओ-खीश्त दर्द से भर न आये क्यूँ

रोयेंगे हम हज़ार बार कोई हमें सताये क्यूँ

दैर नहीं हरम नहीं दर नहीं आस्ताँ नहीं

बैठे हैं रहगुज़र पे हम गैर हमें उठाये क्यूँ

क़ैद-ए-हयात-ओ-बन्द-ए-ग़म अस्ल में दोनों एक हैं

मौत से पहले आदमी ग़म से नजात पाये क्यूँ

'ग़ालिब"-ए-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं

रोइये ज़ार-ज़ार क्या कीजिये हाय-हाय क्यूँ